यज्ञ की यह शुद्ध हवा, सब रोगों की है दवा।

यया प्रयुक्तया चेष्टया राजयक्ष्मा पुरा जितः।
तां वेदविहितामिष्टमारोग्यार्थी प्रयोजयेत्॥

(च.सं.चि. स्थानम्- 8.122)

प्राचीनकाल में जिन यज्ञों के प्रयोग से राजयक्ष्मा (दुःसाध्य रोगों) को जीता जाता था, आरोग्य चाहने वाले मनुष्य को उन वेदविहित यज्ञों का अनुष्ठान करना चाहिए।

इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः। -गीता -3.12

यज्ञ से तृप्त देवगण यजमान की इच्छाओं को पूर्ण करते हैं।